P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पर्यटन का सामाजिक व आर्थिक विकास पर प्रभावः भरतपुर जिले के सन्दर्भ में

वन्दना सिंह गुर्जर
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

पर्यटन वह शिक्षा रूपी रथ है जिस पर सवार होकर विश्व के किसी भी शोध कार्य एवं अध्ययन को विस्तृत एवं गहनता तक ले जाया जा सकता है। जिसका एक गहन एवं विशद अध्ययन भरतपुर जिला पर्यटन पर भी किया जा रहा है।

ट्यूरिज्म शब्द की उत्पत्ति टाइनस शब्द से मानी जाती है जो लेटिन भाषा के टारनस शब्द का अपभ्रंश है। जिसका तात्पर्य एक चक्र से या पहियों के घुमाने से हैं। 12 वी शताब्दी के मध्य में सर्वप्रथम पर्यटन शब्द का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने वाली यात्रा के लिए किया गया था। यह यात्रा लगातार अनेक क्षेत्रों के लिए होती है। पर्यटन एक व्यक्ति अथवा समाज, द्वारा होने वाली आर्थिक एवं स्वभाविक प्रक्रिया है। पर्यटन के अर्थ से यह तथ्य स्पष्ट है कि पर्यटन आर्थिक सामाजिक एवं आमोद–प्रमोद जैसे क्रियाकलापों की सहभागिता का नाम है। विभिन्न स्थानों की आर्थिक प्रक्रिया, सामाजिक संरचना, भौगोलिक तथ्य, ऐतिहासिक एवं वर्तमान तथ्यों को परिभाषित करने का कार्य पर्यटन करता है।

मुख्य शब्द : पर्यटन, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक

प्रस्तावना

पर्यटन भूगोल के अन्तर्गत पर्यटन से सम्बन्धित सभी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। पर्यटन एक प्रकार से क्षेत्र के पर्यटक स्थलों की वास्तविकता की जाँच का कार्य भी करता है तथा किये गये अध्ययन को भौगोलिक सीमाओं के अन्तर्गत स्वीकार करता है। संक्षेप में पर्यटन भूगोल में पर्यटन का अर्थ, संकल्पना, परिभाषा, पर्यटन विकास, पर्यटन का महत्व, विशेष पर्यटन स्थल, क्षेत्रीय पर्यटन स्थल, स्थिति अनुसार पर्यटन स्थल, धार्मिक या भौगोलिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन स्थल, सामरिक स्थल, पर्यटन एवं समाज, पर्यटन एवं पर्यावरण, तथा पर्यटन का विभिन्न मानवीय पहलुओं पर प्रभाव आदि विषय वस्तु का अध्ययन किया जाता है।

अतः पर्यटन और भूगोल के अन्तःनिहित सम्बन्धों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोनों एक दूसरे से घनिष्ट रूप से सह सम्बन्धित है। यह अवश्य है कि भूगोल पूर्ण है तो पर्यटन आंशिक है लेकिन भौगोलिक अध्ययन को पूर्णता प्रदान करने में भी पर्यटन की बड़ी भूमिका है भले ही यह भौगोलिक अध्ययन में आंशिक भाग है किन्तु पर्यटन भौगोलिक अध्ययन में अपना महत्व एवं स्थान उसी प्रकार रखता है, जिस प्रकार भारतीय भोजन में नमक अपना स्थान रखता हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पर्यटन द्वारा संसार के सभी क्षेत्रों का अद्यतन अनुसरण किया जा सकता है। जो समय के अनुसार परिवर्तनषील रहते हैं।

एफ.डब्लू. ओलिगिव के अनुसार, पर्यटक वह व्यक्ति है जो अपनी इच्छा से एक स्थल से दूसरे स्थल को आता जाता है तथा वह निम्न दो शर्तें पूरी करता है (1) ऐसा व्यक्ति अपने रहने के स्थान से एक वर्ष से कम समय के लिए बाहर रहता है। (2) स्वयं की यात्रा के दौरान किये जाने वाला व्यय अपने घर से प्राप्त करता है न कि वह यात्रा के समय प्राप्त करता है।

श्री जोस इगनेसी डी एग्रीला के अनुसार पहले पर्यटन एक स्थल के रूप में मोटर द्वारा यात्रा करने, पर्वतारोहण, पड़ाव डालने, साहसिक भ्रमण के संकलन के रूप में जाना जाता था।

स्विस प्रोफेसर हुन्जीकर एवं क्राफ्ट के अनुसार, ''पर्यटन उन प्रवृतियों एवं सम्बन्धों का गठजोड़ है जो पर्यटक की यात्रा एवं ठहरने से उत्पन्न होती है। यह स्थाई निवास तथा धनार्जन करने की क्रिया से सम्बन्धित नहीं है।''

प्रोफसर हुन्जीकर के अनुसार, ''पर्यटन उन सम्बन्धों एवं तथ्यों का गठजोड़ है जो कि यात्रा एवं व्यक्तियों के अल्पकालीन निवास के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। यह स्वयं के निवास स्थान से दूर हो तथा किसी भी रूप में धन कमाने की क्रिया से सम्बन्धित न हो।''

युनीवर्सल शब्दकोष के अनुसार पर्यटक शब्द 1876 से भी पहले प्रयोग किया जाता था। इसके अनुसार पर्यटक वह व्यक्ति है जो कि जानकारी प्राप्त करने तथा मनोरंजन करने के लिए यात्रा करता है ताकि दूसरे व्यक्तियों को अपनी यात्रा वृतांत का वर्णन दे सके।

अर्थषास्त्री एवं पर्यटन लेखक नोरमल के अनुसार ''प्रत्येक व्यक्ति जो विदेषों में स्थाई रूप में निवासित होने या रोजगार की दृष्टि के अलावा अन्य कारणों से प्रवेष करता है तथा जो अपने अस्थाई ठहरने के दौरान इस देष में अपने अर्जित धन को व्यय करना चाहता है।''

पर्यटन की प्रकृति

आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीक का युग है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के बीच की दूरियाँ बहुत कम हो गई है जिसका व्यापक प्रभाव पर्यटक, पर्यटन एवं यात्रा के प्रति सोच में आए परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। संसार में संचार एवं परिवहन के साधनों ने दूरियों को कम कर दिया है। जिससे पर्यटन की प्रकृति भी व्यापक एवं गतिशील हो गई है। पर्यटन के द्वारा क्षेत्रों का विकास, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन के साथ साथ राजनैतिक विचारों में भी, सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहे हैं। इसी प्रकार भरतपुर जिले में भी पर्यटन की प्रकृति उक्त परिवर्तनों को समाहित करते हुए गतिमान रही है। जिसको व्यवसाय कहना भी उपयुक्त होगा।

पर्यटन का महत्व

वर्तमान में पर्यटन में बहुआयामी परिवर्तन देखे जा रहे हैं, जिसका अर्थ सीधा पर्यटन के महत्व और व्यापकता को इंगित करता है पर्यटन विभिन्न तथ्यों और उनके पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों का संयोग बनता जा रहा है। विभिन्न भूगोलवेताओं, अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों एवं समाज शास्त्रियों ने इसे विश्वस्तरीय अध्ययन विषयवस्तु के रूप में स्वीकृति प्रदान की है। पर्यटन को मानव भूगोल की एक शाखा में सम्मिलित किया गया है। वर्तमान पर्यटन का स्वरूप क्षेत्रीय सें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का हो गया है। पर्यटन गतिविधियाँ प्रत्येक स्थान प्रहर, मौसम में कमोबेश विद्यमान रहने के कारण इसके समाज के बहुत बड़े भाग पर सतत् एवं सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होते जा रहे हैं। जिनका विशेषकर आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा है। अतः पर्यटन की भूमिका वर्तमान समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है, और इसके कारण जिले के आर्थिक एवं सामाजिक स्वरूप में भी विकास हुआ है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि प्राकृतिक सुरम्यता व सौंदर्य को देखने, स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्वतीय स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों की भाषा, संगीत, साहित्य, लोक जीवन तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने धार्मिक स्थलों का दर्शन करने आदि की दृष्टि से यात्रायें की जाती है, उसे पर्यटन कहते है।

पर्यटन की आज की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत ने अपनी शुरूआत इस क्षेत्र में विश्व के अन्य देशों की तुलना में देर से की। 70 के दशक तक भारत सरकार इसके महत्व से अनभिज्ञ थी। जब पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने पर्यटन का अलग विभाग गठित किया तथा डॉ. कर्णसिंह को केन्द्रीय पर्यटन मंत्री बनाया तब से पर्यटन को विशेष पहचान मिलने लगी है।

भरतपुर जिला राजस्थान का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थल के रूप में विशेष रूप से जाना जाता है। यहाँ के राजा–महाराजा के महल अपनी वेशभूषा, गौरवमयी इतिहास, रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, हस्तकला आदि के लिए अपनी एक अलग पहचान बनाई हुई है। यहाँ की ब्रज भाषा, यहाँ के धार्मिक स्थल, सुन्दर बाग बगीचे, लोकगीत व नृत्य आदि पर्यटन को बढ़ावा देते है।

यहाँ का घनापक्षी विहार, लोहागढ़, गंगाजी का मंदिर, लक्ष्मण जी का मंदिर, राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र, जसवंत पशु प्रदर्शनी, डीग के जलमहल एवं रंगीन फव्वारें, बयाना का किला, उषा मंदिर, खानवा का मैदान, वैर के सफेद महल एवं फुलवारी, बयाना की तलाकनी मस्जिद, मीराना कब्रिस्तान आदि प्रसिद्ध है।

अध्ययन क्षेत्र

भरतपुर, जो कि राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार कहलाता है, यह 26^0 22′ से 27^0 83′ उत्तरी अक्षांस तथा 76^0 53′ से 78^0 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह समुद्र तल से 100 मीटर ऊपर स्थित है। यह दिल्ली से 187 कि.मी. दूर है। जिले की सीमाऐं हरियाणा के गुडगाँव, उत्तरप्रदेश के आगरा व मथुरा तथा राजस्थान के धौलपुर, करौली, दौसा व अलवर जिलों को स्पर्श करती हैं। भरतपुर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5566 वर्ग किलोमीटर है। भरतपुर जिले की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 2548462 है। भरतपुर जिले में कुल आठ तहसीलें हैं

भरतपुर जिले की पहचान राजस्थान के पर्यटन मानचित्र में उसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण उल्लेखनीय है। मेलों में भरतपुर की रंग–बिरंगी संस्कृति छलकती है। प्रसिद्ध मेलों में दशहरा मेला, बृज चौरासी परिक्रमा मेला, कैला देवी झीलका वाड़ा मेला, शीतला माता का मेला, बाबू महाराज का मेला, देव बाबा का मेला, हीरामन का मेला आदि प्रसिद्ध है। भरतपुर जिला आगरा से 55 कि.मी. (34 मील) दूर है और जयपुर से 185 कि.मी. (115 मील) दूर है। देश के सभी प्रमुख स्थान भरतपुर से सड़क व रेल मार्ग द्वारा जुड़े हुये है।

भरतपुर जिले का तापमान गर्मियों में काफी गर्म व सर्दियों में काफी ठण्डा रहता है। अधिकतम तापमान गर्मियों में 44^0ॅ तक पहुँच जाता है व सर्दियों में 10^0ॅ तक पहुँच जाता है। भरतपुर जिले में वर्षा जून माह के अन्त व जुलाई माह के आरम्भ में होती है, जो अगस्त–सितम्बर तक चलती है तथा वर्षा के दिनों में आर्दता की मात्रा 70–75ः तक रहती है। जिले में सर्दी का मौसम अक्टूबर माह में प्रारम्भ होता है। जनवरी माह में कोहरा व धुंध आम बात है। जिले की तीन प्रमुख नदियाँ बाण गंगा, रूपारेल एवं गंभीर हैं जो वर्षा ऋतु के दौरान ही प्रवाहित

होती है। इन नदियों पर कई प्रमुख सुन्दर बाँध बने हुये हैं। जहां वर्षा ऋतु के दौरान पर्यटकों की भीड़ देखी जा सकती है।

साहित्यावलोकन

पर्यटन विषय से सम्बन्धित पर्यटन विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों, यातायातविदों एवं पर्यटन नियोजकों ने अपने–अपने ढंग से शोधकार्य किये हैं इस विषय पर उन्होंने क्रमबद्ध अध्ययन किये हैं जिनमें कुछ जिला स्तर के तो कुछ राष्ट्रीय स्तर के रहे हैं कुछ अध्ययन विश्व स्तर के भी रहे हैं भूगोलविदों द्वारा पर्यटन के अन्तर्गत क्रमबद्ध व वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन की प्रारम्भिक शुरूआत 20 वीं सदी के प्रारम्भ से हुई है।

एन.के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म केरियर'' में बताया कि ट्रेवल व पर्यटन में व्यक्ति अपना केरियर बना सकता है, होटल मैनेजमेंट का कोर्स करके नई पीढ़ी ट्रेवल एजेंसियों से जुड़कर अपना केरियर बना सकती है।

एन.के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''एच.आर.एम. इन ट्यूरिज्म इण्डस्ट्रीज'' में होटल प्रबन्धन पर प्रकाश डाला। एक संगठन तथा उसकी एजेंसियों तथा उप विभागों आदि के द्वारा एक निष्चित उद्देष्यों पर पहुंचा जा सकता है। गेस्ट की संतुष्टि व मनोरंजन, व्यवसाय तथा प्रबंधन केटरिंग उद्योग पर वर्णन किया।

के.एस. नागापथी 2011 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म डवल्पमेंट, ए न्यू अपरोच'' पर्यटन का अर्थ, पर्यटन के प्रकार, हेरिटेज होटल, ट्रेवल एण्ड ट्यूर ऑपरेट्स, ट्यूरिज्म प्लानिंग व विकास पर काफी प्रकाष डाला है।

डॉ. रेणु कथुरिया, 2011 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन विकास'' ने बताया कि समुचे विकासशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में संरक्षित क्षेत्र प्रबन्धकों और स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षण की आवष्यकता के बीच संतुलन कायम करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्यावरण पर्यटन भी एक महत्वपूर्ण संतुलन का पक्ष है।

अषोक मनोरम 2012 ने अपनी पुस्तक ''रिसर्च मेथड्स फॉर ट्रेवल एण्ड ट्यूरिज्म'' में रिसर्च मेथड्स परिभाषित किया तथा मात्रात्मक व गुणात्मक रिसर्च को महत्त्व दिया। पर्यटन व ट्रेवल पर रिसर्च प्लान दिये।

अतुल शर्मा, 2012 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन भूगोल'' में पर्यटन एवं भूगोल में सम्बन्ध बताये, पर्यटन भौगोलिक प्रकृति का एक भाग है और यह उसकी छाया में ही पनपता है आदि को स्पष्ट किया है।

बी.एन. सिंह व मानस चटर्जी, 2015 पुस्तक ''ट्यूरिज्म इन इण्डिया'' प्रथम वोल्यूम इन्होंने जम्मू कष्मीर के लोगों व भूमि, भारतीय संस्कृति, डान्स, ड्रामा, आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस, स्मारक, पर्यटन के कानून व नियम के बारे में बताया।

मीता निहालनी, 2015 ''मैनैंजमेंट ऑफ इण्टरनेषनल ट्यूरिज्म'' में अपनी पुस्तक में बताया कि अन्य उद्यागों की तुलना में पर्यटन उद्योग एक सहायक उद्योग हो सकता है। क्योंकि पर्यटन लगातार बढ़ रहा है।

राम आचार्य, 2016 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म एण्ड कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया'' में बताया कि संस्कृति सबके लिए समान है भारतीय संस्कृति को आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व तथ्यात्मक रूप से जाना जाता है। भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है। संस्कृति के द्वारा पर्यटन का विकास होता है।

यादव मंजु (2017) ने पर्यटन उद्योग में ऐतिहासिक स्मारकों के योगदान का मूल्यांकन किया।

डॉ. के.डी. यादव एवं प्रो. बी.एल. अग्रवाल (2018) ने ''पर्यटकों का आकर्षण राजस्थान'' योजना में राजस्थान के पर्यटकों का उद्योगों के विकास और सम्भावनाओं, मेले और त्यौहारों के आयोजन एवं सुझावों में विभक्त करते हुये वर्णन किया है।

भारत एवं राजस्थान में पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में उल्लेखनीय कार्य किये गये हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों में भूगोल के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में पर्यटन भूगोल एक पूर्व रूप से स्थापित विषय है तथा विभिन्न स्तरों पर अनेक शोधकार्य हो रहे हैं। पर्यटन भूगोल में वर्तमान में अनेक पाठ्यपुस्तके भी उपलब्ध करायी गई है पर्यटन विकास एक विशेष वातावरण में उपयोगी एवं सामाजिक महत्व का रहे इस ओर ही यह शोध कार्य करने का एक सहज एवं आकादमिक प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक एवं जनांकिकीय (Demographic) स्वरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलों एवं उनके ऐतिहासिक विकास एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सरकारी प्रयासों व विभिन्न योजनाओं का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन का स्थानीय लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से उत्पन्न समस्याओं एवं पर्यटन के भावी विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना

1. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है।
2. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से जंगली जानवरों के प्राकृतिक आवासों पर दबाव बढ़ रहा है।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास के फलस्वरूप सामाजिक गतिविधियों (चोरी, धोखाधडी, भिक्षावृति) में वृद्धि हो रही है।

विधि तंत्र

किसी भी शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए एक उपयुक्त शोध विधि बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। जिसके द्वारा शोधकार्य को सम्पन्न किया जाता है प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भी शोधविधि अपनायी गयी है जिसमें प्राथमिक व द्वितीय स्तर के आंकड़ों का उपयोग उपयुक्त तालिकाओं द्वारा किया गया है। इसी के साथ मानचित्रों, आरेखों एवं विभिन्न गणितीय एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भरतपुर जिले की प्रत्येक तहसील के आंकडों तथा पर्यटन स्थलों के अनुसार आंकड़ों का संकलन किया गया है।

पर्यटन स्थलों के संरचनात्मक विश्लेषण के लिए कई धरातलीय मानचित्रों का उपयोग किया गया है। पर्यटन के विकास के लिए सम्भावित कार्यो, का आंकलन किया गया है तथा उनके विकास को इंगित किया है। पर्यटन सम्बन्धी प्राचीन स्थलों के ऐतिहासिक अध्ययन को भौगोलिक दृष्टि से भी देखा गया है। स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटन के लिए अनेक स्थानों पर सर्वेक्षण द्वारा प्राथमिक आंकड़ो का संकलन कर अध्ययन की सत्यता की जांच की गई है। द्वितीय आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न आनुभाविक व सांख्यिकीय विधियों को अपनाया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रतीकात्मक अध्ययन के लिए चयनित पर्यटन स्थलों का सम्पूर्ण अध्ययन किया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शोध कार्य की गुणवत्ता के लिए प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण में विभिन्न विधियों के लिए सांख्यिकीय प्रणाली को उपयोग में लिया गया है। जिनके द्वारा मानचित्र, छाया मानचित्र, आरेख, आदि की स्पष्टता देते हुए शोध कार्य को पूर्ण किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भरतपुर जिले में पर्यटन के विश्लेषण के लिए मानचित्रों एवं आरेखों का उपयोग किया गया है जिसमें प्रथम अवस्थिति मानचित्र, धरातलीय मानचित्र, पर्यटन मानचित्र आदि का उपयोग किया गया है। इसी प्रकार आरेखों के अन्तर्गत पाइ आरेख, वृत आरेख, रेखीय आरेख दण्ड आरेख आदि का उपयोग किया गया है, जिनसे प्राप्त प्राथमिक एवं द्वितीय आंकडों का श्रेणीबद्ध एवं प्रतिशत समूह तथा वर्ष वार सांख्यिकीय अनुपात आदि को आधार मानकर आरखे बनाये गये हैं इसी प्रकार मानचित्रों को भी भौगोलिक तथ्यों तथा क्षेत्रीय, तहसीलवार, प्रतिदर्श अध्ययन, सारणियों आदि को श्रेणीबद्ध करके छाया विधि व प्रतीक चिन्हों द्वारा पूर्ण किया गया है, जिसमें शीर्षक, उत्तर दिशा, मानचित्र संख्या, मापनी, संकेत एवं मानचित्र की विषय वस्तु के साथ मानचित्र बनाये गये हैं। अतः प्रस्तुत, शोध प्रबन्ध की गुणवत्ता एवं स्पष्टता के लिए उपयुक्त समूह, सारणियों, आंकड़े, प्रतिशत सांख्यिकीय विधि द्वारा प्राप्त मान, तथा रेखीय आरेखों में समानुपाति वर्ष एवं आंकडों का चयन कर उपयोग किये हैं जिससे शोधकार्य सरल, स्पष्ट, सहज व समझने में आसान बन सकें।

समस्याऐं

जिले में पर्याप्त ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की स्थिति के बावजूद पर्यटन विकास का उच्च स्तर प्राप्त नहीं हुआ। राजस्थान में अन्य पर्यटन स्थलों की तुलना में पर्यटन की सम्भावनाएं अधिक है। किन्तु क्षेत्र में कुछ समस्याऐं ऐसी है जो पर्यटन विकास में बाधक है–

इनमें पर्यटन स्थलों पर स्थानीय समुदायों, प्रशासन और पर्यटकों के बीच समन्वय का नहीं होना, स्थानीय लोगों का पर्यटन के प्रति जागरूकत नहीं होना आदि बहुत से ऐसे पहलू है जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में पर्यटन को बाधित करते हैं।

जिले में पर्यटन विकास के सम्मुख प्रमुख समस्याओं को खोजने का प्रयास किया गया। जिसमें निम्न समस्याये सामने आई–

1. आमजन की उदासीनता
2. जन अपराध
3. असंतोष, हड़ताल एवं आंदोलन
4. यौन उत्पीड़न
5. प्रशासनिक समन्वय का अभाव
6. शिक्षण–प्रशिक्षण की अपर्याप्ता
7. विमान सेवाओं एवं सुविधाओं की अपर्याप्ता
8. पेशेवर अकुशलता एवं अन्य बाधाए
9. जिला स्तर पर पर्यटन विकास निगम की तरफ से कोई अधिकृत टैक्सी स्टैण्ड, पर्यटन गाइड एवं सुरक्षा केन्द्र की स्थापना नहीं है।
10. प्राचीन संरक्षित स्मारकों एवं किलों की मरम्मत, देखभाल, आधुनिकीकरण एवं सौन्दर्यकरण नही हो रहा है।

सुझाव

1. पर्यटन में शोध व अनुसंधान को बढ़ावा देना चाहिए।
2. जिले में निजी क्षेत्र द्वारा होटलों व रेस्टोरेंट की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. पर्यटन कर्मचारियों को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
4. आन्तरिक पर्यटकों की संख्या बढ़ाने एवं युवाओं में पर्यटन प्रकृति को बढ़ावा देने के लिए विशेष टूर पैकेज, सम्मेलन, उत्सव, मेलों आदि का आयोजन करना चाहिए।
5. अध्ययन में पाया है कि शहर में उतरते ही भिखारियों और लपकों का पर्यटकों पर झपट पड़ना पर्यटन उद्योग पर विपरित प्रभाव डालता है, जिन्हें दूर करना चाहिए।
6. मानवीय संसाधनों को प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए। इस हेतु होटलों, पर्यटन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाये।
7. ग्राहकों को त्वरित एवं कुशल सेवा प्रदान करने के लिए होटल को आधुनिक साज–सज्जा से संपन्न बनाना चाहिए ताकि पर्यटक सेवा से संतुष्ट हो सकें।
8. विद्युत एवं पेयजल की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।
9. बैंकों के पास विदेश मुद्रा को परिवर्तित करने की सुविधा होनी चाहिए।
10. पर्यटन स्थलों पर टेलीफोन के साथ–साथ फैक्स, इन्टरनेट की सुविधा भी होनी चाहिए।
11. पर्यटन स्थलों पर टेलीफोन के साथ–साथ फैक्स, इन्टरनेट की सुविधा भी होनी चाहिए।
12. सरकार अपनी नीति के अन्तर्गत पर्यटकों व स्थानीय लोगों के बीच सकारात्मक और मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना के लिए भी कार्य करना चाहिए। पर्यटकों के लिए लोगों को जागरूक कर ढुलमुल नीतियों को स्पष्टवादी एवं युक्तिसंगत बनाना चाहिए ताकि निर्धारित योजना तुरन्त पूर्ण हो सके।
13. सरकार को चाहिए कि वह समय–समय पर किलों की मरम्मत करवाये, रंग–रोगन का कार्य करवाये। उसकी देखरेख के लिए सरकार को योजनाएं और नीतियों को बनाने के साथ–साथ उन योजनाओं व नीतियों को क्रिया में लाये न कि कागजों तक ही सीमित कर दें।

14. वर्तमान पीढ़ी को दूर–दूर तक व्यापक पैमाने पर फैली सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए शिक्षित एवं प्रेरित किये जाने की मजबूत रचना तैयार की जानी चाहिये। क्योंकि सांस्कृति धरोहर की रक्षा केवल सरकार पर छोड़ देना काफी नहीं है। यह सांस्कृतिक धरोहर तो देश की धरोहर है और इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन की जिम्मेदारी सभी नागरिकों की भी है।
15. शिल्पग्राम, ग्रामीण हाट, ग्रामीण त्यौहारों एवं मेलों आदि के द्वारा भी पर्यटन को एक नया विस्तार देना संभव है। इसलिए परम्परागत पर्यटन को विकास के तौर–तरीके में बदलाव किया जावें व उनका प्रचार प्रसार हो।
16. विरासत बचाकर पर्यटन उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता है क्योंकि विरासत से प्रभावित होकर ही पर्यटन यहां आते हैं। दूर देशों के पर्यटक यहां हमारी सभ्यता संस्कृति से प्रभावित होकर आते हैं।
17. पर्यटक स्थलों की सफाई और साज सज्जा पर ध्यान दिया जाये। अनेक ऐतिहासिक इमारतें जो जर्जर अवस्था में पहुँच चुकी है। इन्हे संरक्षण प्रदान किए जाए, इनके स्वरूप को और निखारा जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आनन्द अविनाश, (2007) : ''ट्यूरिज्म प्रस्पेक्टिव इलन द् 21 सेचुरी, ''नई दिल्ली।*
2. *कपुर प्रमोद एण्ड किशोर सिंह, (2007) : ''रॉयल राजस्थान, ''नई दिल्ली पब्लिकेशन।*
3. *खान ए. नासिफ, (2006) : ''डवलपमेंट ऑफ इण्डिया'', नई दिल्ली पब्लिकेशन, भारत सरकार।*
4. *बदन वी.एस., (2007) : ''फाइनेन्शल मैनेजमेंट ऑफ ट्रेवल एण्ड ट्यूरिज्म'', नईदिल्ली।*
5. *माहेश्वरी, दीपक (2006) : ''राजस्थान एक अध्ययन'', प्रतियोगिता साहित्य साहित्य भवन पब्लिकेशन।*
6. *न्यू ट्रेड पॉलिसी 2008 से 2012 भारत सरकार।*
7. *प्रगति प्रतिवेदन पत्रिकाएं राज दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म, आरटीडीसी, जयपुर, 2012*
8. *आहिर्नी, एम.जे., (2000) ''द सोशियल इफैक्ट ऑफ ट्यूरिज्म, न्यूयार्क।*
9. *पर्यटन नीति, पर्यटन कला, संस्कृति विभाग, जयपुर, 2012–2013, 2014–15*
10. *राजस्थान पर्यटन ''उपलब्धियों के वर्ष ''पर्यटन विभाग, जयपुर 2012*
11. *दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर 2011–2014*
12. *सुजस, सूचना व जनसंचार मंत्रालय द्वारा, जयपुर 2010*
13. *पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोसर्स 2011–12, 2012–13, 2014–15*
14. *जिला गजेटियर राजस्थान : निदेशक जिला गजेटियर सचिवालय, राजस्थान*
15. *शर्मा जे.पी. : प्रायोगिक भूगोल रस्तोगी एण्ड कंपनी मेरठ*
16. *बनर्जी रमेश चन्द्र अकादमी जयपुर : उपाध्याय दयाशंकर मौसम विज्ञान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।*